संतुष्टता

संतुष्टता सभी सुखों में आत्म सुख सर्वश्रेष्ठ सुख है, सभी दिव्य गुणों में संतोष ही शिरोमणि है। जैसे सभी आभूषण मूल्यवान शोभनिक होते है। परन्तु ताज एक ऐसा आभूषण है जो उसके राज्य भाग्य की निशानी है। वैसे ही संतोष सभी गूणों में सिरताज है। संतुष्ट मनूष्य राजा के सामान सुखी होते है संतोषी मनुष्य के पास चाहे स्थूल चीज की कमी भी हो तो भी उसकी खुशी को देखकर लोग समझते है कि ये भरपूर है। संतोष ऐसा दिव्य खजाना है जो संतोषी मनुष्य को सुख देता है परन्तु दूसरों को भी सुख देता है।

अगर शरीर की व्याधि भी होती है तो व्यक्ति यही सोचता है कलियुगी तमोगूणी शरीर में कुछ न कुछ गड़बड़ होती रहती है। भले ही तन रोगी है परन्तु मन से ईश्वरीय चिन्तन का रस लेता है। संतुष्ट रहने वाला व्यक्ति का लोग संग पसन्द करते है। संतोष गूण दूसरों को स्नेही बनाता है। असंतुष्ट व्यक्ति से दूर भागते है। स्पष्ट है संतुष्टता जोड़ने वाली सुई है, जब कि असंतुष्टता मोहब्बत की कैची है। संतोषी मनुष्य के हाथ में यश होता है अर्थात थोड़ी सी भी प्राप्ति को बढ़ाने की खुबी होती है। जब कि असंतुष्ट व्यक्ति के हाथ में वरक्कत नही होती है। संतोषी के पास एक चीज भी हो तो भी उसके व्यवहार से तथा बचन से ऐसा लगता है कि उसके पास लाख है। असंतुष्ट के पास यदि लाख हो तो भी उसके बात से लगता है कि वह कंगाल है।

संतोषी विकट स्थिति में भी अपने को भी हल्का बना देता है। असंतोषी हल्की स्थिति में भी भारी अनुभव करता है। संतुष्ट व्यक्ति समझता है कि यह वैरायटी ड्रामा है इसमें भिन्न-2 प्रकार के लोग है सबके संस्कार स्वभाव अलग-2 है। जब ज्ञान के हथियार को छोड़ देते है तो असंतुष्टता का वार हाता है तब तंग या सताया हुआ महसूस करते है। जिसका असंतोषी स्वभाव है वह कभी संतुष्ट नहीं रहता है। इच्छाये कामनायें अलग-2 रूप धारण करेगी जैसे धन खुशी का साधन है। वैसे ही संतुष्टता भी खुशी का साधन है जैसे भोजन शरीर के लिए खुराक है वैसे ही खुशी भी मन अथवा आत्मा के लिए खुराक है अत: कहा गया है खुशी जैसा खुरा क नहीं तो मानसिक खुशी के लिए संतुष्टता को कायम रखें। तो निर्धनता की अवस्था में भी यह सोचे कि संसार परिवर्तनशील है। हर एक को अपने कर्म का फल मिलता है प्रभू चिन्तन करके ईश्वर से योग लगाकर अविनाशी कमाई करें अत: मनुष्य को सोचना चाहिए कि अधिक धनवान न होने के कारण है अनमोल लाभ है। न कोई कोठी है न कारखाना न झंझटों का संसार ईश्वर मेरा सहारा बुद्धि का लगाम परमात्मा के हाथ में देने को तैयार है। धन आज नहीं तो कल मिटटी में मिल जाने वाला है। संतोष व्यक्ति के जीवन का सबसे बड़ा धन है। संतोष गुण के प्रतीक रूप में भारत में संतोषी देवी की उपासना भी की जाती है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com